कमीनो को सरदार बनाना

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

महमुदुल मवाइज़ उर्दु से रिवायत का खुलासा लिप्यान्तर किया गया है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

लोगो का सरदार और लीडर कमीना आदमी होगा यानी कौम का कमीना आदमी सरदार और लीडर बनेगा ये चीझ भी आम हो गई है वैसे भी हमारे यहा तो ओ.बी.सी वालो के लिये स्टेजे मख्सूस की जा रही है और वही बढते जा रहे है हम अपनी आंखो से देख रहे है.

आगे रसूलुल्लाहﷺ इरशाद फरमाते है के कौम का सरदार और लीडर और उसका बडा एक रजील और कौम का एक दम बदतर आदमी हो ऐसे बदतर आदमी को सरदार बना दिया जाये ये भी एक अलामत मुसीबतो के उतरने की रसूलुल्लाहﷺ ने बतलायी है अब देख लिजिये इस ज़माने के अन्दर जो मुनासिब और ओहदे है और इस तरह के जो काम है वो ऐसो के हवाले किये जाते है अब इस तरह के

कामो मे ऐसे लोगो का इन्तेखाब धीरे धीरे अमल मे लाया जा रहा है शरीफ लोग एक तरफ होते जा रहे ताके जब किसी जगा जनरल Meeting होती है लोग जमा होते है और वहा पर किसी को अपना बडा मुन्तखब करने का वकत आता है तो ऐसे मोके पर शरीफ लोग मुंह छुपाते फिरते है इस डर से के अगर हम यहा आगे बडे तो पता नही हमारे साथ कैसा मामला किया जायेगा.

ऐसी सूरत मे जो लोग ऐसे है के लोगो को बोज लगते है वो आगे आ जाते है और इस तरह की ज़िम्मेदारीयो के काम उनके हाथों मे आ जाते है बहुत सी जगा ऐसा होता है मे कोई आम हुकम नही लगा रहा हु बाज़ जगा ऐसा होता है, केहना ये चाहता हु के अब उम्मत के अन्दर ये चीझ बढती जा रही है जाहिर है के रसूलुल्लाहﷺ ने जिस चीझ की पेशीन्गोयी फरमायी है वो हो कर ही रहेगी हमे अपने आपको बचाना है हदीस के अन्दर ये जितनी अलामते इस किसम की बयान की जाती है उनके मुताल्लीक उल्माने लिखा है के एक तो

वो अलामते है जिन से बचना हमारे इख्तियार मे है उनसे अपने आपको बचाना ज़रूरी है और जो हमारे इख्तियार मे नही है उनसे कोई बहस नही है.

बहरहाल रसूलुल्लाहﷺ फरमाते है के ज़िम्मेदारी के अहम और बडे काम कौम के कमीने और ज़लील किसम के लोगो के हवाले किये जायेन्गे ये भी गोया एक चीझ है जिसके नतीजे मे उम्मत आज़्माइशे मे मुब्तेला होगी.

इस मोके पर मुफस्सीरीन ने लिखा है के ये जो ओहदे और मन्सब और ज़िम्मेदारीया है और लोगो को मुख्तलिफ मन्सब और ज़िम्मेदारीया दी जाती है के हुकूमत का फला काम है और फला औहदा और मन्सब है वो फला के हवाले है ये जितने मन्सब और ओहदे है ये सब अल्लाह की तरफ से अमानत है जिन लोगो को ये इख्तीयारत है के वो ओहदे और काम लोगो के हवाले करे तो वो ऐसे लोगो के हवाले करे जो उसके लायक हो नाहल के हवाले न करे ये ओहदे और जिम्मेदारिय नाहल के हवाले करना भी अमानत मे

खियानत है. तो हमे भी जब कोई इन्तेखाब का वकत आये तो सोच समझ के राय और मशवेरा देना चाहिये.

रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फरमाया के जिसके हवाले ओहदे सुपुर्द करने की ज़िम्मेदारी हो और उसने किसी ऐसे आदमी को दिया जो उसका अहल नही है हालाके उसके मुकाबले मे उस काम की अहलीयत और सलाहीयत रखने वाला शख्स मौजूद है तो उस आदमी ने अल्लाह और रसूल और तमाम मोमिनीन के साथ खियानत की इसलीये ये भी ज़रूरी है के ज़िम्मेदारी जिसके हवाले की जाये वो उसका अहल हो उस काम की उसमे सलाहीयत हो उसका ऍहतेमाम करना ज़रूरी है.